बिलौटी परबत पर

लेखन: फ्रांस्वा रिचर्ड

चित्र: एन बुगैट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

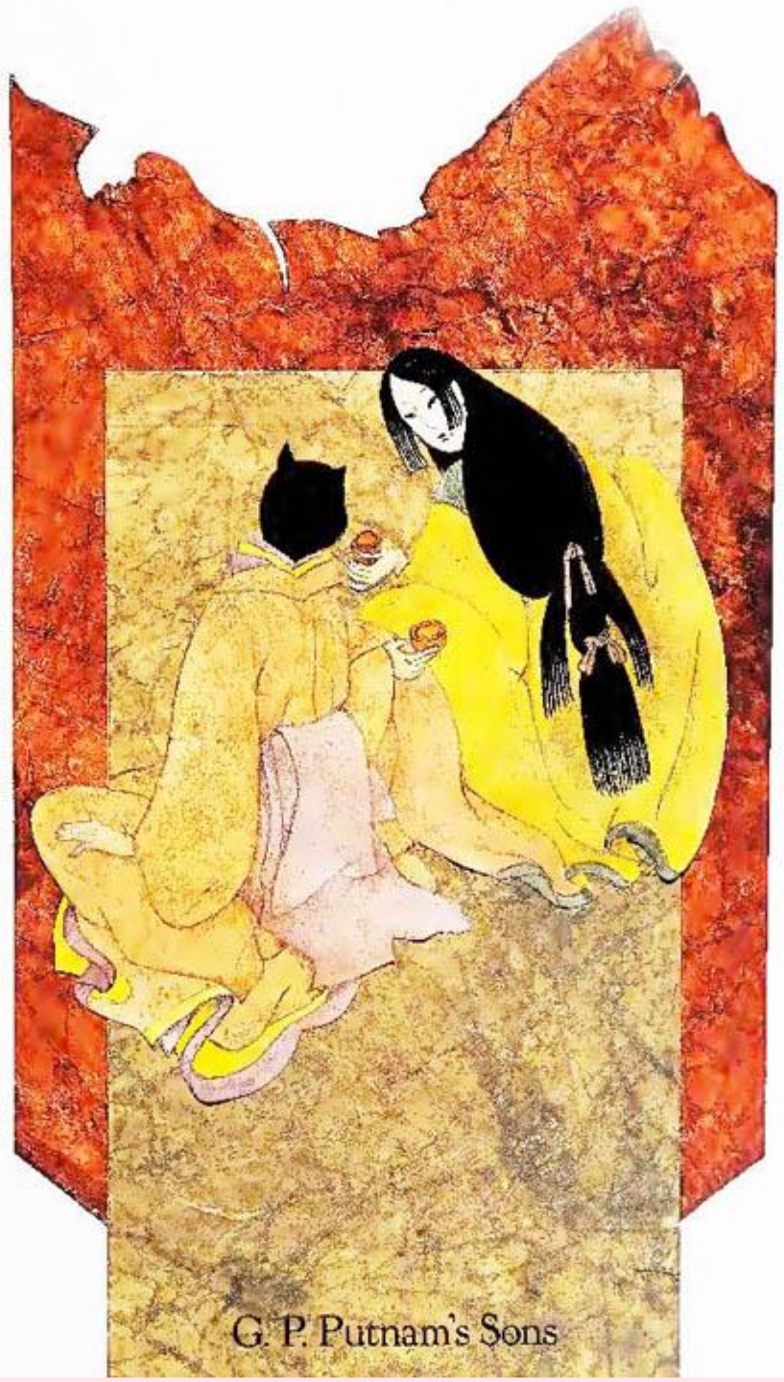


बिलौटी परबत पर

लेखन: फ्रांस्वा रिचर्ड

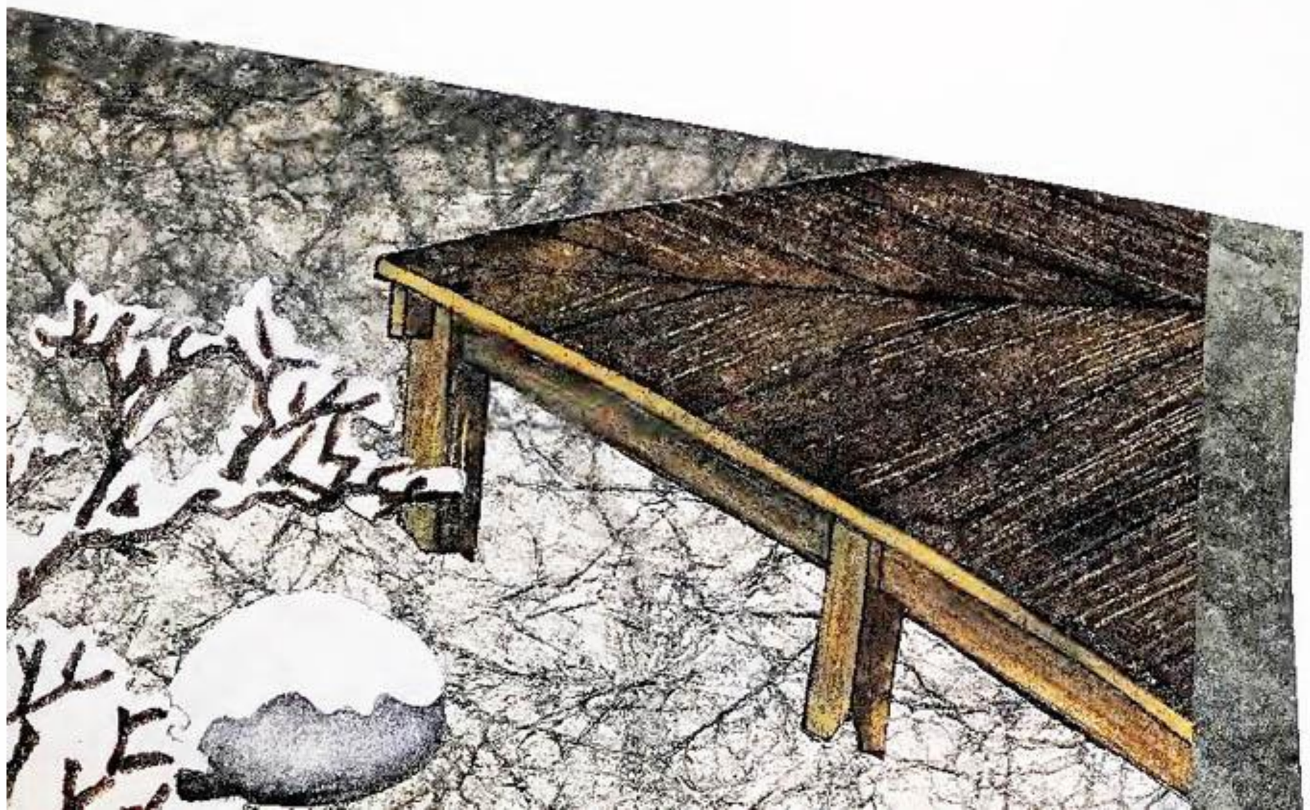
चित्र: एन बुगैट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



कुछ लोगों का कहना है कि दुनिया उन लोगों में बंटी है जो बिल्लियों से प्यार करते हैं और जो नहीं करते। ऐसे भी लोग हैं जो बच्चों से प्यार करते हैं - शुक्र है ख़ुदा का कुछ तो ऐसे हैं - और वे जिनके दिल इतने छोटे हैं कि उसमें बच्चा समा ही नहीं सकता। पर क्या आप किसी ऐसे इन्सान की कल्पना कर सकते हैं जो न बच्चों से प्यार करता हो ना ही बिल्लियों से?

बहुत समय पहले, यहाँ से बहुत दूर जापान के एक गाँव में ऐसी ही एक औरत रहती थी। उसकी आवाज़ कर्कश थी और चेहरा इतना खट्टा मानो सड़ा दूध हो।

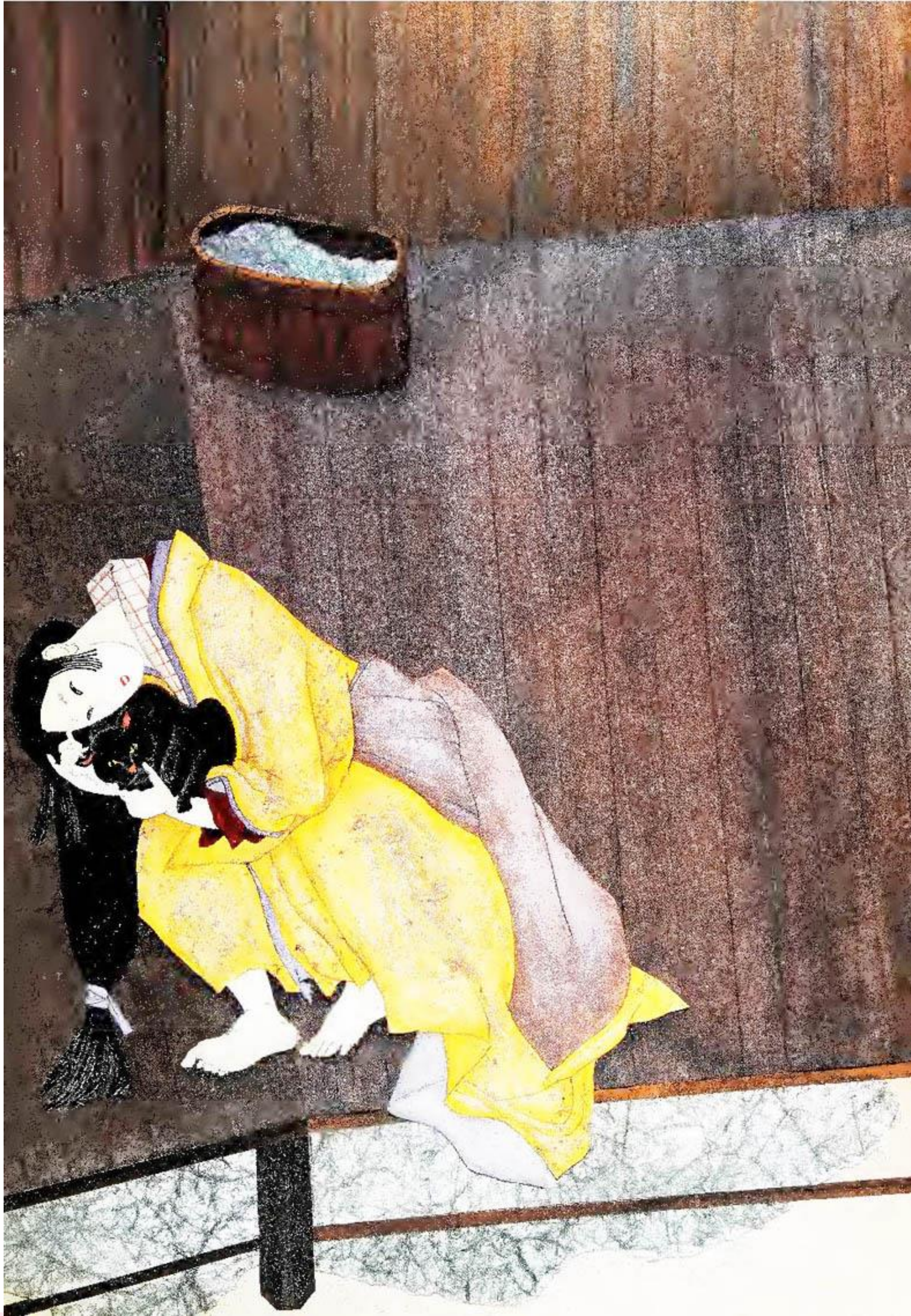






शो एक शान्त लड़की थी जो इस बुरी औरत के घर काम करती थी। जब से उसके माँ-बाप की मौत हुई थी वह अपनी बदमिजाज़ मालकिन के घर दिन भर कड़ी मेहनत करती, बिना किसी से अपने ख़याल बाँटे।

पर जैसे ही रात होती वह अपने सारे सपने और उम्मीदें अपनी इकलौती सखी को बताती - यह सखी एक सुडौल काली बिल्ली थी जिसे वह 'राज़' नाम से पुकारती थी। इसलिए क्योंकि राज़ के बारे में कोई नहीं जानता था। शो उसे मच्छी खिलाती और उसके गर्म रोंओं को सहलाती। अगर मालकिन को राज़ के बारे में पता चल जाता तो उसकी नाराज़गी का ठिकाना न रहता।



आख़िर एक भयंकर दिन यह हो ही गया। मालकिन ने शो को राज़ की ठुड्डी खुजलाते देख लिया। फिर क्या था। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस चीज़ को मेरे घर में लाने की?" वह चीखी। तब उसने बिल्ली को उसकी गरदन से पकड़ कर उठाया और उसे झकझोरने लगी, तब तक, जब तक राज़ ने उसके हाथ को अपने पंजे से नोच न दिया।

जैसे ही मालकिन ने चौंक कर उसे नीचे पटका, राज़ सरपट सडक की ओर दौड़ी और गायब हो गई। "अपनी सफ़ाई में क्या कहना है तुम्हें?" मालकिन ने नाक चढ़ा शो से पूछा।

"माफ़ कर दें मालकिन," शो फुसफुसाई। पर इन लफ़्ज़ों ने उसके मुँह में कड़वे नींबू का स्वाद भर दिया।





समय गुज़रता गया। चैरी के फूल आए और गए, पर शो अपनी इकलौती सहेली को न भुला सकी। जब बरसात होती तो उसे फ़िक्र होती कि राज़ गीली हो ठण्ड में कुड़कुड़ा रही होगी। रात को अपने चौकन्ने कानों से वह उसके घुरघुराने की आवाज़ सुनने की कोशिश करती।

एक दिन गाँव में ख़बर फ़ैली कि एक ज्ञानी ज्योतिष आने वाले हैं। कहा गया कि वे किसी भी सवाल का जवाब दे सकते हैं। "क्या वे मुझे मेरी राज़ कहाँ है इस बारे में बता सकेंगे?" शो सोचने लगी। आँखें भींच वह दूर तक देखने लगी, जब तक उसे ज्योतिष का सुनहरा चोंगा नज़र न आ गया।



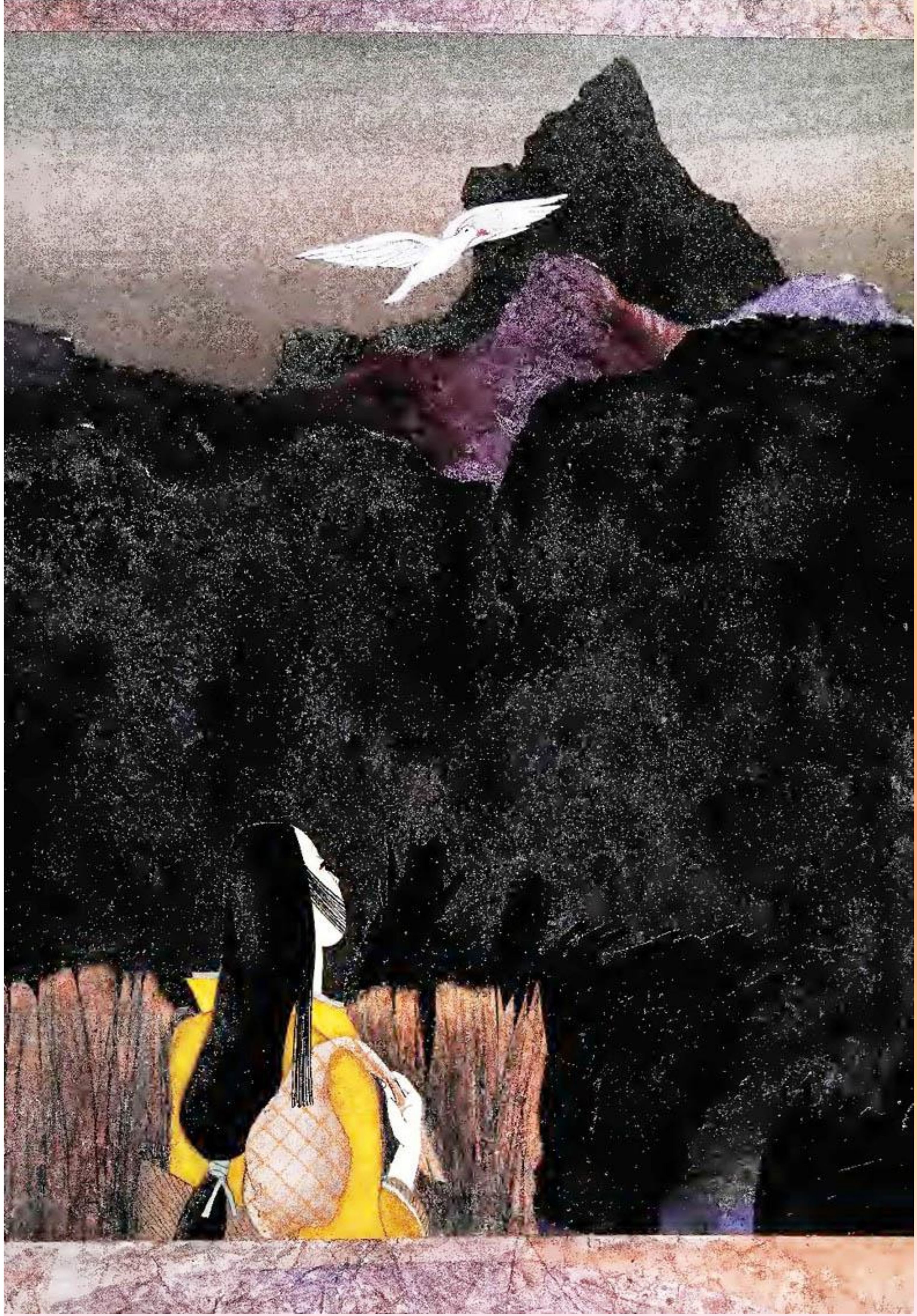


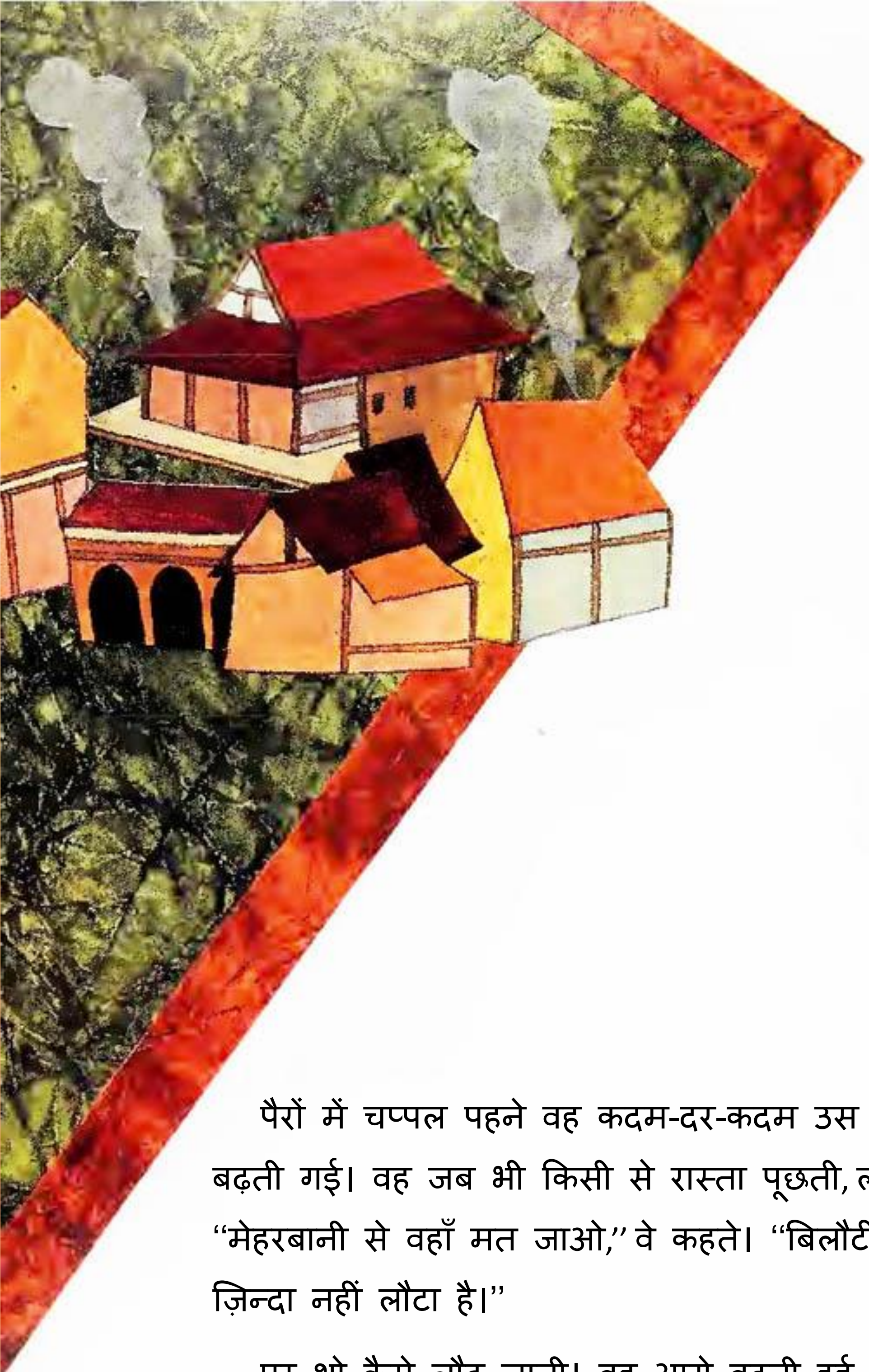
मालकिन ने अपने चाकरों को ज्ञानी बाबा से बात करने की मनाही कर दी थी। पर जब वे आ ही गए, तो शो से रहा न गया। जब कोई देख नहीं रहा था वह आगे बढ़ी और फुसफुसा कर अपना सवाल पूछ ही लिया। बाबा ने अपनी नज़र उस पर गड़ाई।

"जो तुमने खोया है, वह दरअसल तुम्हारी मालकिन की किसी भी चीज़ से ज़्यादा कीमती है," ज्योतिष ने कहा। "पर तुम्हें अपना राज़ केवल बिलौटी परबत पर मिल सकेगा, और वह जगह ऐसी है जहाँ से कोई नहीं लौटा है।"

मालकिन ने बात सुन ली। "मेरी चीज़ों से ज़्यादा कीमती?" वह चीखी। "तो फिर शो बिलौटी पर्वत जाए और अपना राज़ लेकर आए।"

कपड़ों की एक पोटली और कुछ चावल के केक ले शो अपने लम्बे और कठिन सफ़र पर निकल पड़ी।







पैरों में चप्पल पहने वह कदम-दर-कदम उस पथरीले रास्ते पर बढ़ती गई। वह जब भी किसी से रास्ता पूछती, लोग थर्राने लगते। "मेहरबानी से वहाँ मत जाओ," वे कहते। "बिलौटी परबत से कोई भी ज़िन्दा नहीं लौटा है।"

पर शो कैसे लौट जाती। वह आगे बढ़ती हुई पर्वत पर चढ़ती गई। उसके पाँव चोटिल हो गए और सिर चकराने लगा। पर्वत के पेड़ ज़्यादा गहरे और घने होने लगे। शो को लगा कहीं उसे लौटना ही ना पड़े।

तब अचानक एक टहनी हटाने के बाद उसने जंगल के बीच एक साफ़ किए गए हिस्से में कदम रखा। वहाँ सुनहली घूप में नहाए छोटे-छोटे घर थे जिनकी छतें खुशनुमा लाल रंग की थीं।

वह उन घरों के पास पहुँची ही थी कि एक घर का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक युवती निकली जिसकी आँखें अजीब-सी ललौंस लिए थीं। वह एक भूरा और हरा किमोनो पहने थी।

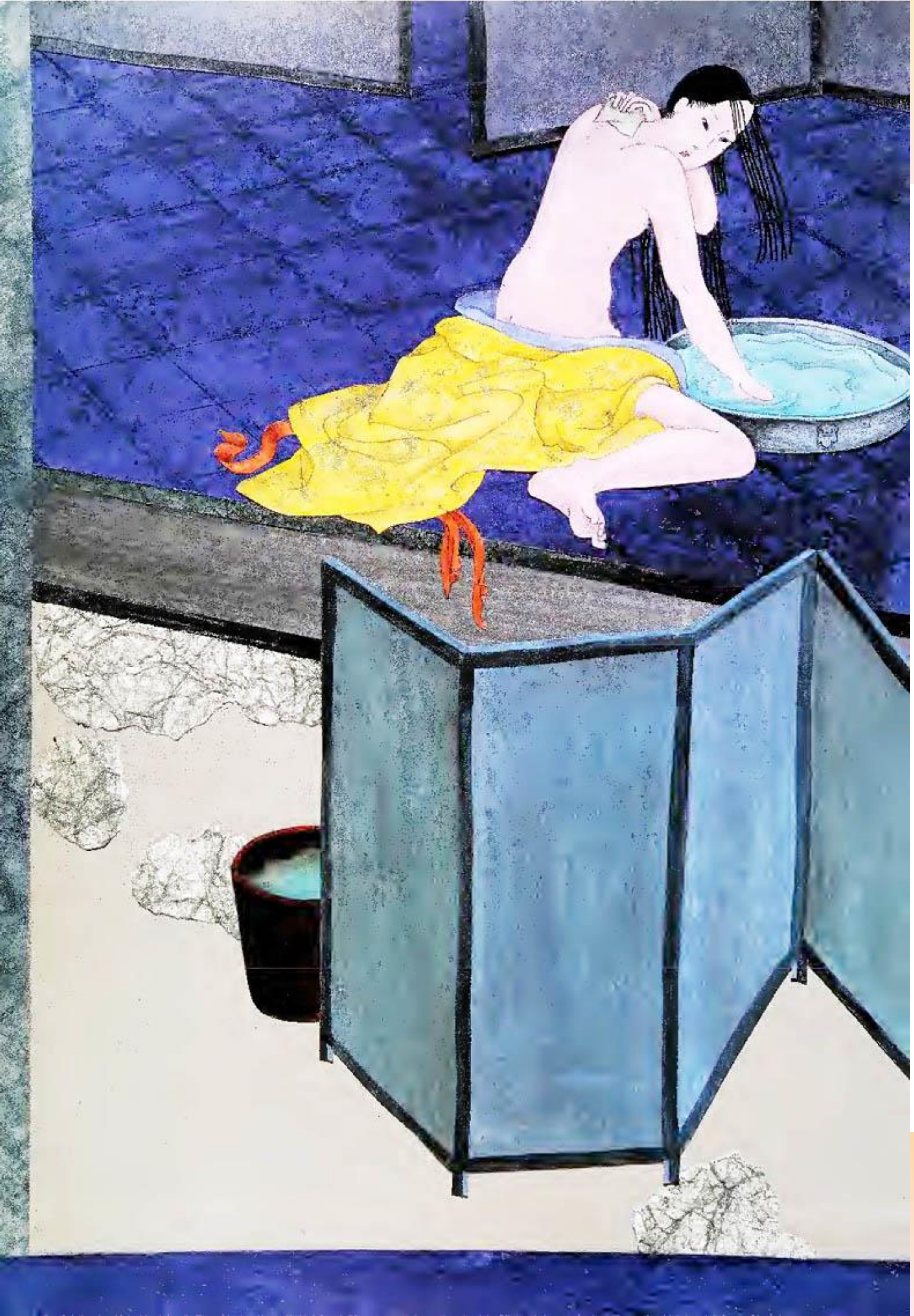
युवती की नाक फड़की, उसने अपनी गरदन झटके से शो की ओर मोड़ी। "हाँ?" वह फुफकार कर बोली। "क्या चाहिए तुम्हें?"

"मैं अपनी नन्ही काली बिलौटी को तलाश रही हूँ। क्या आपने उसे देखा है?" शो ने जल्दी से पूछा।

उस औरत ने अपने होंठ पैनी गुलाबी जीभ से चाटे। "हम्म्म्म्म!" तुम लगती तो बड़ी लज़ीज़ हो।"

शो घबरा कर एक कदम पीछे हटी। पर तब तक एक और महिला आई। उसके लम्बे काले बाल थे और वह लहराता किमोनो पहने थी।

"डरो मत," उसने घुरघुराती आवाज़ में कहा। "तुम काफ़ी दूर से आई हो। कुछ आराम करो। कुछ खा-पी लो। मुसाफिरों का यहाँ हमेशा स्वागत है।" ठीक उसी पल बिल्लियों का एक झुण्ड पास से गुज़रा। शो को उनमे से एक को देख राज़ की याद हो आई। उसने अपने डर को काबू में किया और उन स्त्रियों के पीछे घर के अन्दर चल दी।



उन महिलाओं ने शो को नहाने के लिए ठण्डा खुशबूदार पानी दिया और पहनने को रेशमी किमोनो। तब एक महिला खाने को लज़ीज़ पकवान लाई। शो ने शुक्रगुज़ारी से भर झुक कर धन्यवाद दिया। आज तक किसीने उस पर इतना ध्यान दिया ही नहीं था।

शो जब खा चुकी वह कमरे में घूमने लगी। कमरे की दीवारें नाज़ुक कागज़ के परदों से बनी थीं। उसे एक परदे के पीछे से उन स्त्रियों की आवाज़ आई, जिन्होंने उसका स्वागत किया था। शो ने उस परदे को छुआ तो वह ज़रा सा खिसक गया। अब शो अन्दर झांक सकती थी।

"मुझे लगता है कि हम उस मुसाफिर को नहीं खा सकते जो बिल्लियों से इतना प्यार करती हो!" एक ने कहा।

"पर वह कितनी स्वादिष्ट लगती है...!" दूसरी ने कहा। शो का शरीर ठण्डा पड़ गया।





शो को अपने पीछे खटका सुनाई दिया, उसने जल्दी से परदा बन्द किया और झपट कर मुड़ी।

"मेरे घर में तुम्हारा स्वागत है!" उसके सामने एक लड़की खड़ी थी, जिसका चेहरा बिल्ली का था। शो पहले तो सहम गई, हालांकि उसे आवाज़ जानी-पहचानी लग रही थी। तब अचानक उसे पक्का पता चल गया कि यह तो राज़ है! खुशी की एक चीख के साथ दोनों सखियों ने एक-दूसरे को बाँहों में भर लिया।

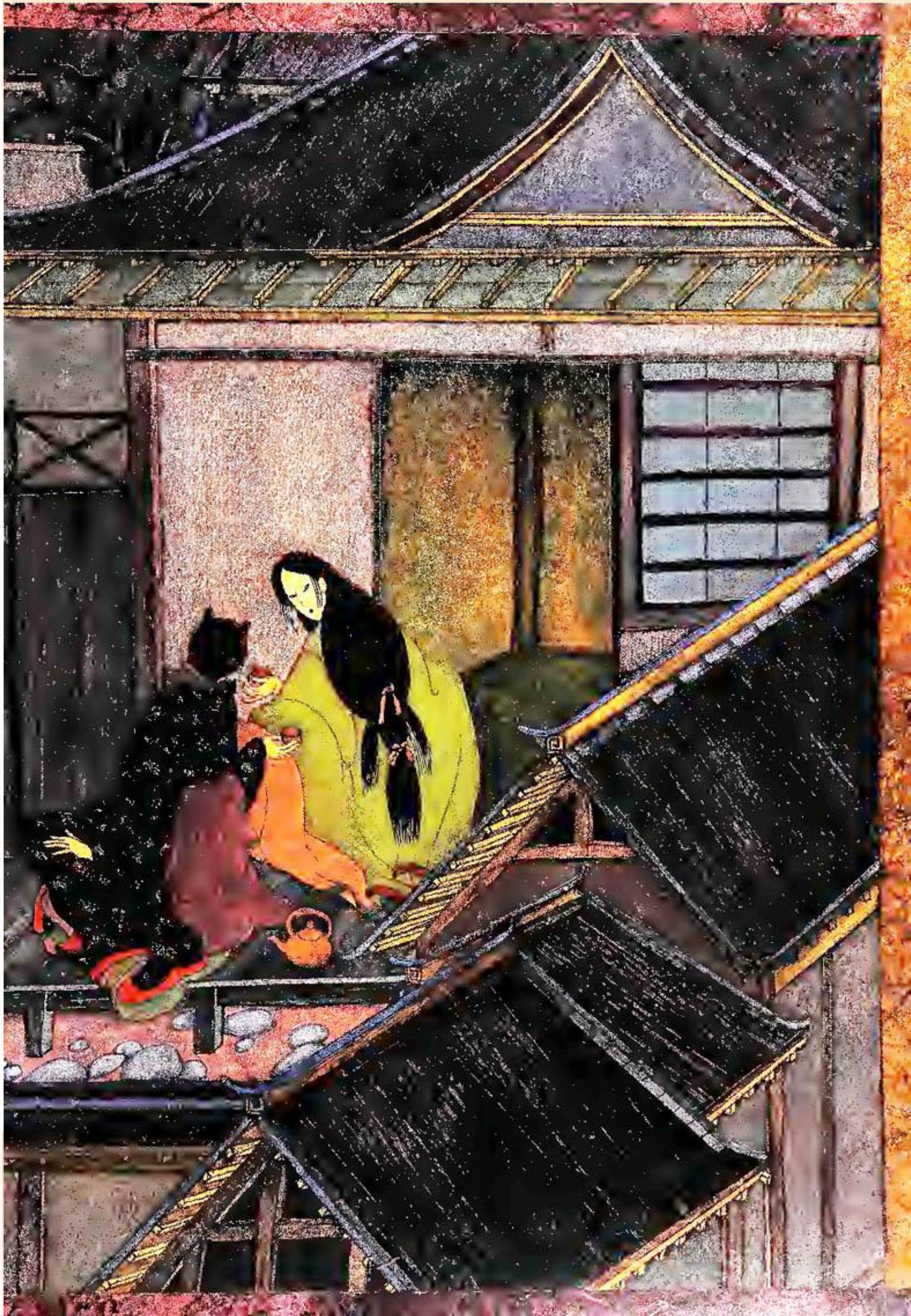
वे दोनों पूरा दिन साथ बैठी हंसती-बतियाती रहीं। दोनों ने वह सब कह डाला जो पहले सिर्फ शो ही कह पाती थी। उनकी गपशप बीच में सिर्फ गरम चाय की प्याली सुड़कने या ठण्ड लगने पर रूईदार किमोने पहनने के लिए ही रुकी।



आख़िरकार शो ने राज़ से पूछ ही लिया, "बताओ तो प्यारी दोस्त वे औरतें मुझे खाने की बात क्यों कर रही थीं?"

"वे औरतें हैं ही नहीं, तुम्हें क्या समझ नहीं आया? वे जंगली बिल्लियाँ हैं। वे तुम्हें तब तक कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगी, जब तक मैं यहाँ हूँ," यह कहते हुए राज़ का चेहरा उदास हो गया। "पर तुम्हें खुद की हिफ़ाज़त के लिए जल्द ही लौट जाना चाहिए।"

राज ने भारी मन से शो के सफ़र के लिए कपड़े और खाना बांधा। और तब उसने शो को एक छोटा कशीदे से कढ़ा बटुआ थमाया। "हमें अब विदा लेनी होगी। पर यह साथ लेती जाओ। यह तुम्हें याद दिलाता रहेगा कि तुम सदा मेरे दिल में बसी रहोगी। सफ़र के दौरान यह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा और जब घर पहुँच जाओगी तो तुम्हें आज़ादी भी दिलाएगा।"



शो फिर से अपने लम्बे और कठिन सफ़र पर निकल पड़ी। घने जंगल में जंगली बिल्लियाँ उसे देख घुरघुराईं। पर जैसे ही शो ने राज़ का दिया बटुआ ऊपर उठाया वे सटक लीं।

एक गाँव में शो की मुलाकात उस व्यक्ति से हुई जिससे उसने जाते वक्त रास्ता पूछा था। “तुम!..” उसने सांस अन्दर खींच, उसे छूकर कहा। मानो यह जांच रहा हो कि कहीं भूत तो नहीं है। “तुम तो लौट आईं!”

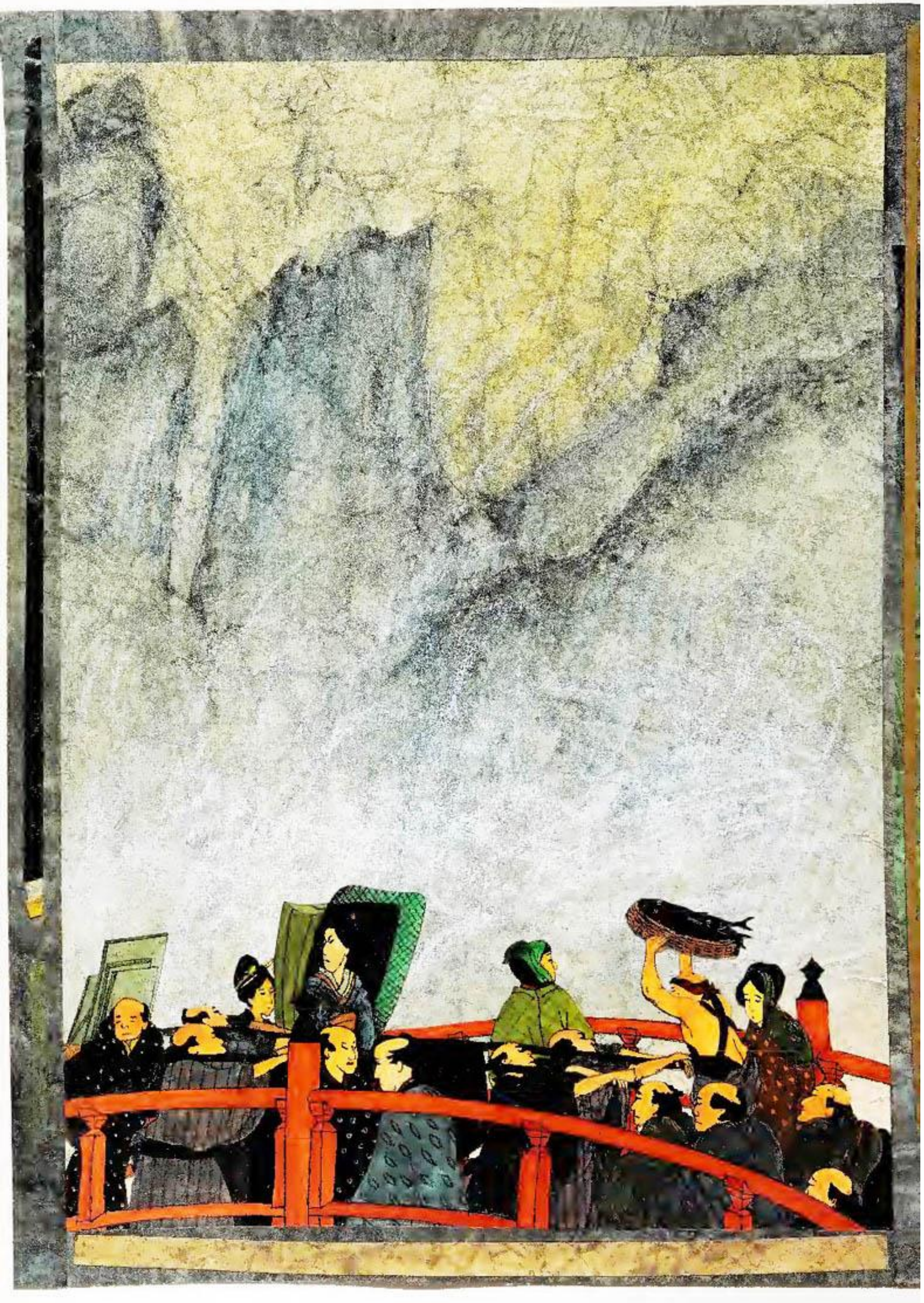
शो चलती रही। जब भी उसके पैर थकान से भारी हो जाते वह राज़ के बारे में सोचने लगती। उसे फ़ौरन लगता कि वह हवा से भी हल्की हो गई है।

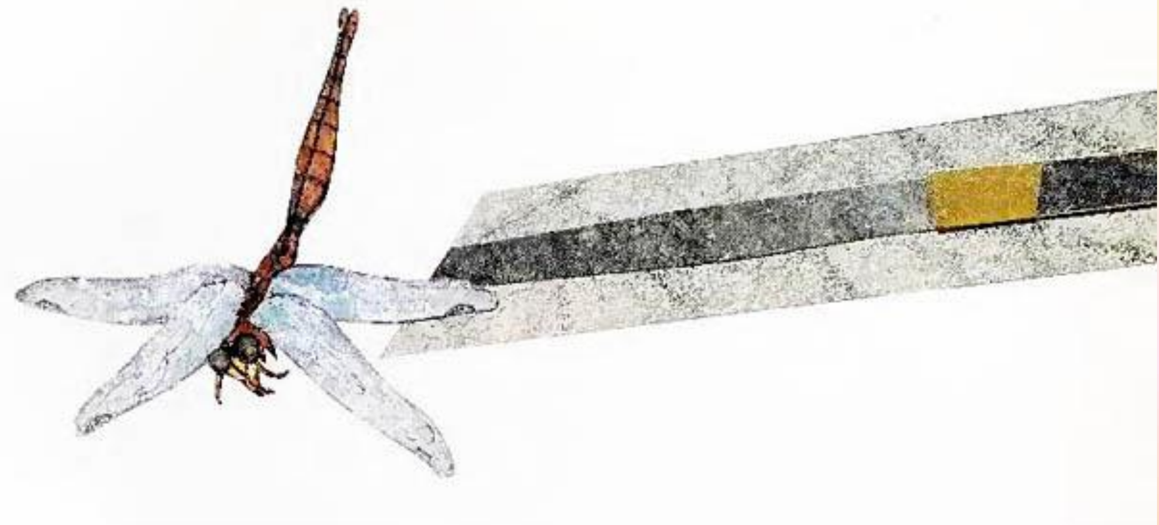
आख़िरकार वह अपनी मालकिन के आँगन में पहुँची। बाकी सेवक उसे देख पास घिर आए। शो की कहानी सुन खुशी मनाने लगे। जब शो ने बटुआ खोला उसमें से सोने के सिक्के लुढ़के। सब तालियाँ बजा कर नाचने लगे।

सब, सिवा मालकिन के।









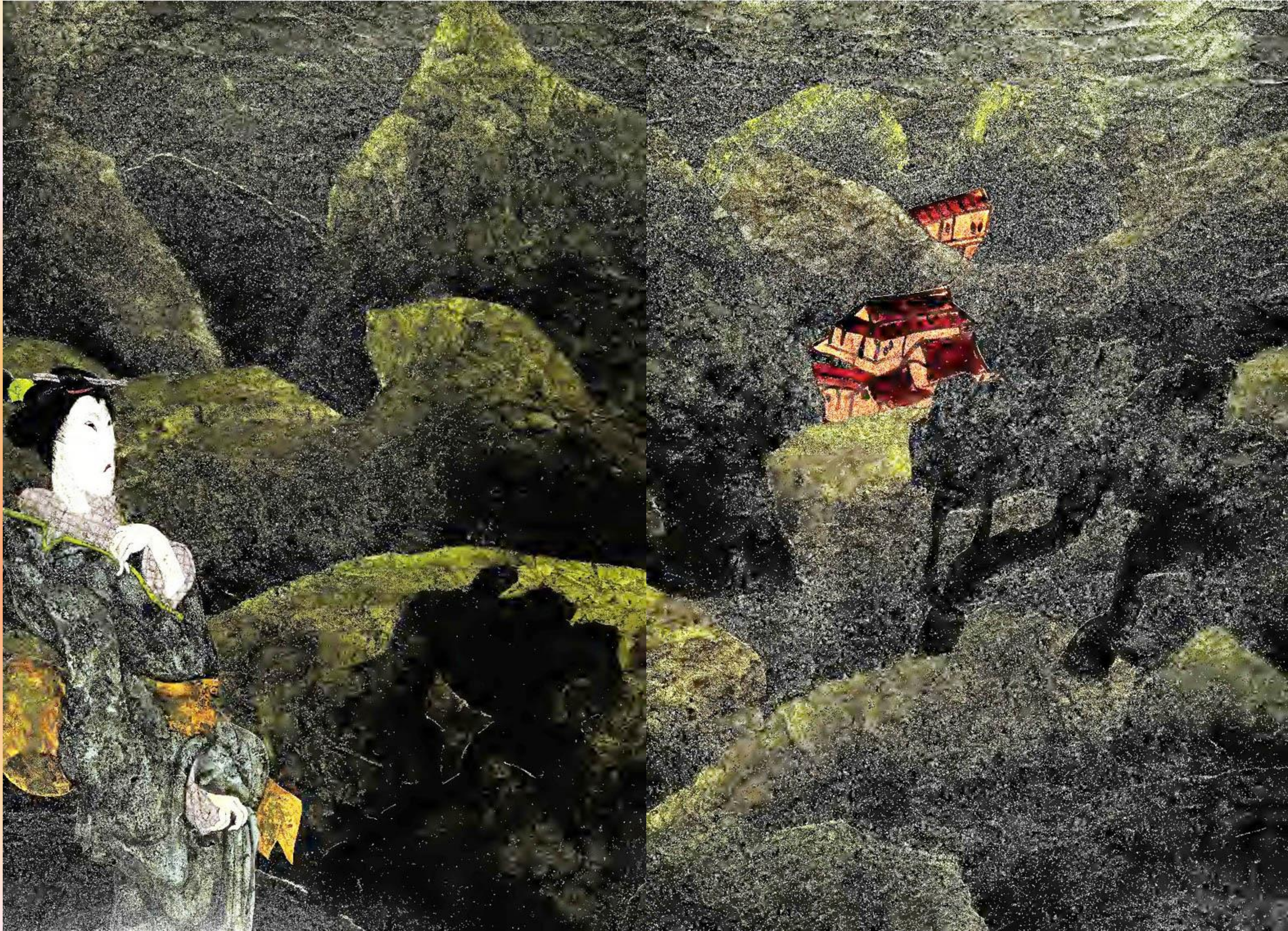
मालकिन के होंठ नीचे उतर उसकी ठुड्डी तक आ चुके थे, मानो ठण्डा पानी पत्थर के चेहरे से टपक रहा हो। "अगर यह बेवकूफ़ छोकरी शो, सोने से भरा बटुआ पा सकती है, तो मैं तो बेशक उससे बेहतर कर सकती हूँ," उसने भौं सिकोड़ते कहा। "आखिर मेरा दर्जा उससे कहीं ऊँचा है।"

सो अगले ही दिन वह बिलौटी परबत के लिए निकल पड़ी। उसके सेवादार उसे धरती से ऊपर पालकी में बिठाए ले जा रहे थे। एक परदा उसकी आँखों को धूप से बचा रहा था। पर उसकी शिकायतें जारी थीं। "क्या तुम लोग तेज़ नहीं चल सकते? देखो, उस उभार से बचना। ओफ्फो!"

जब गाँव वालों ने उसे बिलौटी परबत के ख़तरों के बारे में बताने की कोशिश की, वह चीखी, "हटो मेरे रास्ते से!"

उसके सेवक लम्बे सफ़र और छलनी हुए पैरों से परेशान थे। साथ ही इतना डर भी गए कि कुछ तो जान बचा कर भाग निकले। अख़िरकार मालकिन का कारवां बिलौटी परबत पर जंगल की उस खुली जगह आ ही पहुँचा।

"आगे सब काम मेरा है!" मालकिन सेवकों पर चीखी और उन्हें भगा दिया। तब वह गुरूर से भरी लाल छतों वाले घरों की ओर बढ़ी।





जब मालकिन एक घर के पास पहुँची, एक युवती ने दरवाज़ा खोला। वह कुछ कहती उसके पहले मालकिन भौंक कर बोली, "कुछ समय पहले मेरी नौकरानी यहाँ आई थी। उसकी ही तरह मैं भी राज़ लेने आई हूँ।"

"मेहरबानी से अन्दर आ जाएं," युवती घुरघुराई। शो की ही तरह मालकिन को नहाने को पानी और खाने को लज़ीज़ पकवान दिए गए। शुक्रिया का एक भी लफ्ज़ बोले बगैर मालकिन ने सब स्वीकारा, मानो यह उसका हक़ हो। उसे सेवा-चाकरी करवाने की आदत जो थी। उसका दिमाग़ तो एक ही चीज़ पर अटका था - सोना!

खाना खा चुकने के बाद वह कमरे में घूमी। परदों के बीच की दरार देख वह उस ओर बढ़ी। "मुझे इन्तज़ार करवाने की हिम्मत किसने की?" उसने परदा हटाते हुए कहा।

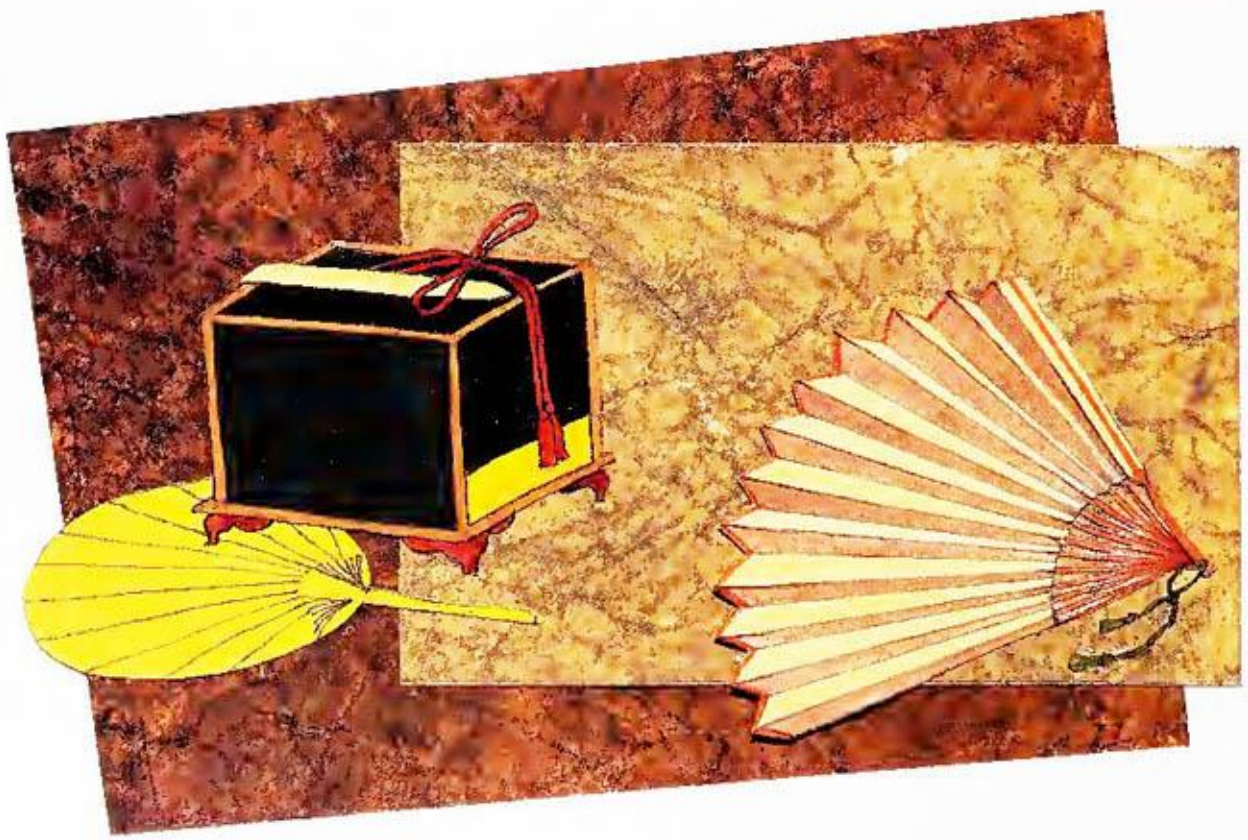
उसके सामने जो दृश्य था वह शो के वर्णन से बिलकुल भिन्न था। दो विशाल बिल्लियाँ भूख से गरज रही थीं। तीसरी घात लगाए अपने होंठ चाट रही थी।

मालकिन ने फ़ौरन परदा बन्द किया। इधर राज़ कमरे में घुसी। "मुझे तुरन्त सोना दे दो, और मैं चली जाऊँगी," मालकिल ने उसी तीखे लहज़े में कहा, जिसे उसके सेवक बखूबी पहचानते थे।

पर राज़ ने एक कर्कश आवाज़ निकाली। पल भर में सारे परदे खुल गए। हर ओर से जंगली बिल्लियाँ कूदीं और मालकिन को चट कर गईं।



समूचे जापान में एक भी इन्सान ने उसकी मौत का शोक नहीं मनाया। जहाँ तक शो का सवाल है, उसने गाँव में एक छोटी-सी दुकान खोली और एक लम्बी और सम्मान की ज़िन्दगी बसर करने लगी। जब भी उसे सड़क पर कोई भटकती बिल्ली मिलती, वह रुक कर उसके कान खुजलाती। तब उसे मच्छी खिलाती, कटोरा भर दूध देती, और किसी तोहफ़े के साथ उसे विदा करती। ''अब जाओ, बिलौटी परबत तलाश लो,'' वह फुसफुसा कर कहती। ''वहाँ पहुँच जाओ तो मेरी अज़ीज़ दोस्त राज़ को उसकी सखी की ओर से एक फूल भी देना।"





शो चुप रह एक दुष्ट मालकिन के लिए काम करती थी, जिसका चेहरा सड़े दूध सा खट्टा था। पर हर रात शो अपने सपने एक काली बिल्ली को सुनाती जिसका नाम राज़ था। और वह भी बड़े ध्यान से बात सनती, जैसे बिल्लियाँ सुन सकती हैं।

पर एक दिन मालकिन को बिल्ली के बारे में पता चल गया। सो राज़ को अपनी जान बचाा कर भागना पड़ा। शो को एक ज्योतिष से पता चला कि राज़ बिलौटी परबत पर है। पर वह जगह ऐसी है जहाँ से कोई लौटता नहीं है। शो साथ में चन्द कपड़ों की गठरी और खाने को चावल के केक ले अपनी सखी को तलाशने निकलती है, यह जानते हुए भी कि शायद वह कभी न लौटे।

